Research Paper IMPACT FACTOR VALUE : 6.247 | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 12 | ISSUE : 7 | JULY 2026

रेत *समाधि* में स्मृति, विभाजन और स्त्री-अस्मिता : एक अंतर्विषयी अध्ययन

बबीता रानी [1]

[1] **(सहायक प्रोफेसर), मानविकी विभाग, महर्षि मारकंडेश्वर (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), मुलाना, अंबाला हरियाणा, इंडिया.**

ABSTRACT:

गीतांजलि श्री हिन्दी साहित्य की एक प्रमुख लेखिका हैं तथा उनके द्वारा लिखित यह उपन्यास रेत-समाधिएक बहुत चर्चित उपन्यास है। गीतांजलि श्री का उपन्यासरेत समाधि समकालीन हिंदी साहित्य की एक मील का पत्थर कृति है, जिसने न केवल भारतीय साहित्य में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई, बल्कि इसके अंग्रेज़ी अनुवाद Tomb of Sand को वर्ष 2022 में अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार मिलने के बाद विश्व साहित्य में भी हिंदी की प्रतिष्ठा को नई उड़ान प्रदान की। यह उपन्यास अपने कथ्य, शिल्प, भाषा और वैचारिक गहराई के कारण हिंदी उपन्यास परंपरा में एक नया अध्याय जोड़ता है। प्रस्तुत शोध-पत्ररेत समाधिमें स्मृति, विभाजन और स्त्री-अस्मिता: एक अंतर्विषयी अध्ययन शीर्षक के अंतर्गत उपन्यास के बहु आयामी स्वरूप का विश्लेषण करता है। इसमें साहित्य, इतिहास, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, स्त्री-अध्ययन तथा सांस्कृतिक अध्ययन के अंतःसंबंधों को समझने का प्रयत्न किया गया है।उपन्यास का केंद्रीय पात्र अम्मा है, जो पति की मृत्यु के बाद गहरे अवसाद और मौन में डूब जाती हैं। परिवार के सदस्यों को येलगता है कि उनका जीवन अब समाप्ति की ओर है, किंतु धीरे-धीरे अम्मा के भीतर जीवन के प्रति एक नई चेतना जागृत होती है। यह परिवर्तन केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक अर्थों में भी अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है। अम्मा का अपने अतीत की ओर लौटना, अपने पुराने प्रेम और विभाजन-पूर्व जीवन की स्मृतियों से संवाद स्थापित करना तथा पाकिस्तान की यात्रा करना, उनके आत्म-अन्वेषण और पहचान की पुनर्प्राप्ति का माध्यम बन जाता है। इस प्रकार उपन्यास जीवन, मृत्यु, स्मृति और पुनर्जन्म की दार्शनिक अवधारणाओं को भी अभिव्यक्त करता है।अम्मा की स्मृतियाँ व्यक्तिगत होते हुए भी सामूहिक इतिहास का हिस्सा बन जाती हैं। उनके अनुभवों में विभाजन की पीड़ा, बिछड़ते संबंध, अधूरा प्रेम और खोई हुई सांस्कृतिक पहचान एक साथ देखने को मिलते हैं। इस दृष्टि सेरेत समाधिस्मृति-अध्ययन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण साहित्यिक पाठ के रूप में सामने आती है।

KEYWORDS:

रेत समाधि, गीतांजलि श्री, स्मृति, विभाजन, स्त्री-अस्मिता, अंतर्विषयी अध्ययन, सांस्कृतिक अध्ययन।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
24th July 2026	25th July 2026
PAPER DOI NO:	**PAPER DOI LINK:**
10.5281/zenodo.21554057	https://zenodo.org/records/21554057

प्रस्तावना

शोध-पत्र का पहला प्रमुख विमर्श स्मृति है। रेत समाधिमें स्मृति केवल एक पुरानी याद नहीं है, बल्कि वर्तमान की पुनर्व्याख्या का साधन है। उपन्यास यह व्यक्त करता है कि इतिहास केवल सरकारी दस्तावेज़ों या राजनीतिक घटनाओं तक सीमित नहीं होता, बल्कि वह मनुष्यों की स्मृतियों, अनुभवों और भावनाओं में भी जीवित रहता है।

दूसरा महत्वपूर्ण आयामभारत-विभाजन का मानवीय पक्ष है। सामान्यतः विभाजन-साहित्य में हिंसा, विस्थापन और सांप्रदायिक संघर्ष का चित्रण मुख्य रूप से मिलता है, किंतुरेत समाधिविभाजन को मनुष्य की स्मृतियों, संबंधों और सांस्कृतिक निरंतरता के संदर्भ में देखता है। उपन्यास यह प्रश्न उठाता है कि क्या राजनीतिक सीमाएँ मनुष्य की भावनाओं, प्रेम और साझा सांस्कृतिक विरासत को विभाजित कर सकती हैं? अम्मा का पाकिस्तान जाना और वहाँ अपने अतीत से जुड़ना इस बात का प्रतीक है कि विभाजन केवल भौगोलिक घटना नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर घटित होने वाली मानसिक और सांस्कृतिक प्रक्रिया भी है। इस प्रकार उपन्यास विभाजन के इतिहास को मानवीय दृष्टि से व्यक्त करता है।

शोध-पत्र का तीसरा प्रमुख आधारस्त्री-अस्मिताहै। गीतांजलि श्री ने अम्मा के चरित्र के माध्यम से यह प्रमाणित किया है कि स्त्री की पहचान केवल पारिवारिक भूमिकाओं तक सीमित नहीं है। पति की मृत्यु के बाद अम्मा स्वयं अपने जीवन के निर्णय लेती हैं, अपनी इच्छाओं को स्वीकार करती हैं और सामाजिक रूढ़ियों का अतिक्रमण करती हैं। वे वृद्धावस्था में भी स्वतंत्र अस्तित्व की घोषणा करती हैं। यह प्रस्तुति भारतीय समाज में वृद्ध स्त्री की पारंपरिक छवि को चुनौती देती है। उपन्यास की बेटी का चरित्र आधुनिक स्त्री-चेतना का प्रतिनिधित्व करता है, जबकिरोज़ीका पात्र लैंगिक विविधता, सामाजिक बहिष्कार और मानवीय गरिमा के प्रश्नों को उजागरकरता है। इस प्रकाररेत समाधिस्त्री-विमर्श को व्यापक सामाजिक और मानवीय परिप्रेक्ष्य में व्यक्त करता है।

अंतर्विषयी दृष्टि से यह उपन्यास अनेक ज्ञान-विषयों का संगम है।

इसमें इतिहास भारत-विभाजन के माध्यम से उपस्थित है, मनोविज्ञान स्मृति और आघात की व्याख्या करता है, समाजशास्त्रपरिवार, पीढ़ियों और सामाजिक संरचनाओं का विश्लेषण करता है, जेंडर स्टडीज़स्त्री और लैंगिक पहचान के प्रश्नों को सामने लाती है तथा सांस्कृतिक अध्ययन भारत और पाकिस्तान की साझा सांस्कृतिक विरासत को रेखांकित करता है। इसी कारण यह उपन्यास अंतर्विषयी अनुसंधान के लिए अत्यंत उपयुक्त माना जाता हैरेत समाधिकी भाषा और शिल्प इसकी सबसे विशिष्ट उपलब्धियों में से हैं। गीतांजलि श्री ने परंपरागत कथा-शैली से अलग हटकर काव्यात्मक, प्रतीकात्मक और बहुस्तरीय भाषा का प्रयोग किया है।

उपन्यास में समय रैखिक न होकर स्मृतियों के माध्यम से आगे-पीछे चलता है। 'रेत' परिवर्तन, अस्थिरता और समय के प्रवाह का प्रतीक है, जबकि 'समाधि' आत्मचिंतन, मौन और आत्म-परिवर्तन का संकेत देती है। इस प्रतीकात्मक संरचना के कारण उपन्यास केवल कथा न रहकर एक दार्शनिक अनुभव में परिवर्तित हो जाता है। समकालीन वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भीरेत समाधि अत्यंत प्रासंगिक है। आज जब विश्व में विस्थापन, सीमाई संघर्ष, प्रवासन, पहचान की राजनीति और सांस्कृतिक अस्मिता जैसे प्रश्न महत्वपूर्ण हैं, तब यह उपन्यास संवाद, सह-अस्तित्व, मानवीय संवेदना और साझा सांस्कृतिक स्मृति का संदेश देता है। यह बताता है कि इतिहास को केवल राजनीतिक घटनाओं के रूप में नहीं, बल्कि मनुष्यों के

अनुभवों और स्मृतियों के माध्यम से भी समझा जाना चाहिए।अंततः यह शोध-पत्र इस निष्कर्ष पर पहुँचता है किरेत समाधि केवल एक साहित्यिक कृति नहीं, बल्कि स्मृति, विभाजन, स्त्री-अस्मिता और सांस्कृतिक पहचान का बहुआयामी दस्तावेज़ है।

गीतांजलि श्री ने इस उपन्यास के माध्यम से हिंदी उपन्यास को नया शिल्प, नई भाषा और नई वैचारिक दृष्टि प्रदान की है। अंतर्विषयी विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि यह कृति साहित्य, इतिहास, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, जेंडर अध्ययन और सांस्कृतिक अध्ययन के बीच सार्थक संवाद स्थापित करती है। इसी कारणरेत समाधि समकालीन हिंदी साहित्य की एक कालजयी रचना है और भविष्य में भी शोध एवं आलोचना के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण बनी रहेगी। समकालीन हिंदी साहित्य में गीतांजलि श्री का नाम उन रचनाकारों में प्रमुखता से लिया जाता है, जिन्होंने कथा-साहित्य को नई वैचारिक दृष्टि, नवीन शिल्प और बहुआयामी संवेदनाओं से समृद्ध किया है। उनका उपन्यासरेत समाधि हिंदी साहित्य की एक ऐसी महत्त्वपूर्ण कृति है, जिसने राष्ट्रीय ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी व्यापक पहचान अर्जित की। वर्ष 2022 में इसके अंग्रेज़ी अनुवाद Tomb of Sand को अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार प्राप्त होने के बाद यह उपन्यास वैश्विक साहित्यिक विमर्श का केंद्र बन गया। यह उपलब्धि केवल एक साहित्यिक सम्मान नहीं, बल्कि हिंदी भाषा और भारतीय साहित्य की वैश्विक स्वीकृति का भी प्रमाण है। रेत समाधिएक बहुस्तरीय उपन्यास है, जिसमें व्यक्तिगत जीवन, सामाजिक यथार्थ, ऐतिहासिक घटनाएँ और सांस्कृतिक अनुभव एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। उपन्यास की कथा एक वृद्ध महिला 'अम्मा' के जीवन के इर्द-गिर्द घूमती है, जो पति की मृत्यु के बाद गहरे अवसाद और मौन में चली जाती हैं। किंतु धीरे-धीरे वे अपने भीतर जीवन की नई ऊर्जा का अनुभव करती हैं और अपने अतीत, स्मृतियों तथा विभाजन-पूर्व जीवन से पुनः जुड़ने की यात्रा प्रारंभ करती हैं। यह यात्रा केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि मानसिक, सांस्कृतिक और अस्तित्वगत यात्रा भी है, जो मनुष्य की पहचान, स्मृति और स्वतंत्रता के गहरे प्रश्नों को उद्घाटित करती है। उपन्यास का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि यह भारत-विभाजन को केवल एक ऐतिहासिक घटना के रूप में प्रस्तुत नहीं करता, बल्कि उसे मानवीय संबंधों, स्मृतियों और सांस्कृतिक निरंतरता के संदर्भ में देखता है। विभाजन ने लाखों लोगों के जीवन, परिवारों और पहचान को प्रभावित किया।रेत समाधिइसी ऐतिहासिक त्रासदी को व्यक्तिगत अनुभवों और भावनात्मक स्मृतियों के माध्यम से प्रस्तुत करता है। अम्मा का पाकिस्तान जाना उन संबंधों और स्मृतियों की पुनः खोज है, जिन्हें राजनीतिक सीमाएँ समाप्त नहीं कर सकीं। इस प्रकार उपन्यास इतिहास और स्मृति के बीच गहरे संबंध को स्थापित करता है। स्त्री-अस्मिता इस उपन्यास का एक अन्य केंद्रीय आयाम है। अम्मा का चरित्र भारतीय समाज में स्त्री की पारंपरिक भूमिका से आगे बढ़कर उसकी स्वतंत्र पहचान, आत्मनिर्णय और जीवन के अधिकार को स्थापित करता है। वे वृद्धावस्था में भी सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती देती हैं और अपने निर्णय स्वयं लेती हैं। इसके साथ ही उपन्यास में स्त्री के अतिरिक्त लैंगिक विविधता, पारिवारिक संबंधों और सामाजिक स्वीकृति जैसे प्रश्न भी गंभीरता से उठाए गए हैं। इस प्रकार यह कृति स्त्री-विमर्श को व्यापक मानवीय और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करती है।प्रस्तुत शोध-पत्र मेंरेत समाधिका अध्ययन अंतर्विषयीदृष्टिकोण से किया गया है। इसमें स्मृति अध्ययन, विभाजन अध्ययन, स्त्रीवादी अध्ययन, सांस्कृतिक अध्ययन तथा समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण का समन्वित उपयोग किया गया है। अंतर्विषयी अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि उपन्यास किस प्रकार साहित्य की सीमाओं से आगे बढ़कर इतिहास, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, जेंडर अध्ययन और सांस्कृतिक विमर्श के साथ संवाद स्थापित करता है। यह अध्ययन इस तथ्य को रेखांकित करता है किरेत समाधि केवल एक साहित्यिक रचना नहीं, बल्कि स्मृति, इतिहास, पहचान, स्त्री-स्वतंत्रता और मानवीय संवेदनाओं का बहुआयामी आख्यान है, जो समकालीन हिंदी साहित्य को नई वैचारिक दिशा प्रदान करता है।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य गीतांजलि श्री के उपन्यासरेत समाधिका स्मृति, विभाजन और स्त्री-अस्मिता के संदर्भ में अंतर्विषयी दृष्टिकोण से विश्लेषण करना है। यह अध्ययन उपन्यास में निहित सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक तथा मनोवैज्ञानिक आयामों को समझने का प्रयास करता है। शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. रेत समाधिमें स्मृतिकी अवधारणा तथा उसके साहित्यिक और सांस्कृतिक स्वरूप का विश्लेषण करना।
2. भारत-विभाजन की ऐतिहासिक त्रासदी तथा उसके मानवीय प्रभावों को उपन्यास के विषय में समझना।
3. उपन्यास में स्त्री-अस्मिता, स्त्री-स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय की अभिव्यक्ति का अध्ययन करना।
4. उपन्यास में उपस्थित सांस्कृतिक पहचान, सीमाओं, विस्थापन तथा मानवीय संबंधों के विविध आयामों का मूल्यांकन करना।
5. रेत समाधिकी भाषा, शिल्प और कथन-प्रविधि की विशिष्टताओं का आलोचनात्मक अध्ययन करना।
6. स्मृति अध्ययन, स्त्री-विमर्श, विभाजन अध्ययन तथा सांस्कृतिक अध्ययन के अंतर्संबंधों के आधार पर उपन्यास की अंतर्विषयी प्रासंगिकता को स्पष्ट करना।
7. समकालीन हिंदी साहित्य मेंरेत समाधिके साहित्यिक योगदान तथा उसकी वैश्विक स्वीकृति का मूल्यांकन करना।

इन उद्देश्यों के माध्यम से यह शोधरेत समाधिके बहुआयामी स्वरूप को समझते हुए उसके साहित्यिक, सांस्कृतिक और वैचारिक महत्व को स्थापित करने का प्रयास करता है।

सैद्धांतिक रूपरेखा

प्रस्तुत शोधरेत समाधि' में स्मृति, विभाजन और स्त्री-अस्मिता: एक अंतर्विषयी अध्ययनशीर्षक पर आधारित है। इस अध्ययन की सैद्धांतिक रूपरेखा विभिन्न समकालीन आलोचनात्मक सिद्धांतों के समन्वित प्रयोग पर आधारित है। सर्व प्रथम स्मृति अध्ययन के अंतर्गत मॉरिस हाल्बवैक्स और जान अस्मान की सामूहिक एवं सांस्कृतिक स्मृति की अवधारणाओं का उपयोग किया गया है, जिनके माध्यम से उपन्यास में व्यक्तिगत और सामूहिक स्मृतियों के अंतर्संबंधों का विश्लेषण किया गया है। स्त्रीवादी आलोचना के परिप्रेक्ष्य में सिमोन द बोउवार तथा भारतीय स्त्री-विमर्श की अवधारणाओं के आधार पर अम्मा के चरित्र, स्त्री-स्वतंत्रता, आत्मनिर्णय और अस्मिता का अध्ययन किया गया है।विभाजन अध्ययनके अंतर्गत भारत-विभाजन से उत्पन्न विस्थापन, सांस्कृतिक आघात और मानवीय संबंधों की पुनर्व्याख्या को समझने के लिए समकालीन विभाजन-विमर्श की अवधारणाओं का सहारा लिया गया है। इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक अध्ययन और उत्तर-आधुनिक आलोचना के आधार पर उपन्यास की भाषा, प्रतीकात्मकता, बहुस्तरीय कथन-शैली तथा सांस्कृतिक पहचान के प्रश्नों का विश्लेषण किया गया है।इस प्रकार यह शोध साहित्य, इतिहास, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान और जेंडर अध्ययन के समन्वय द्वारारेत समाधिके बहुआयामी स्वरूप को समझने का प्रयास करता है।

समकालीन संदर्भ

रेत समाधिका महत्व केवल भारत-विभाजन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समकालीन सामाजिक, सांस्कृतिक और वैश्विक संदर्भों में भी अत्यंत प्रासंगिक कृति है। वर्तमान समय में जब विश्व स्तर पर विस्थापन, प्रवासन, सीमाई संघर्ष, सांस्कृतिक पहचान, लैंगिक समानता और मानवीय अधिकार जैसे प्रश्न प्रमुख हैं, तब यह उपन्यास इन सभी विषयों पर संवेदनशील और मानवीय दृष्टि प्रस्तुत करता है। अम्मा की यात्रा यह संकेत देती है कि राजनीतिक सीमाएँ मनुष्य की स्मृतियों, प्रेम और सांस्कृतिक संबंधों को पूरी तरह विभाजित नहीं कर सकतीं।समकालीन समाज में स्त्री की स्वतंत्र पहचान, आत्मनिर्णय और गरिमापूर्ण जीवन की चर्चा निरंतर बढ़ रही है। रेत समाधि वृद्धावस्था में भी स्त्री की स्वायत्तता और उसकी इच्छाओं को महत्व देकर स्त्री-विमर्श को नया आयाम प्रदान करती है। साथ ही, उपन्यास में लैंगिक विविधता, पारिवारिक संबंधों में परिवर्तन और सामाजिक समावेशन जैसे विषय भी वर्तमान समय की प्रमुख चिंताओं से जुड़े हैं।इस प्रकार रेत समाधि अतीत और वर्तमान के बीच सेतु का कार्य करती है। यह पाठकों को इतिहास से सीख लेते हुए मानवीय संवेदना, सह-अस्तित्व, सांस्कृतिक संवाद और सामाजिक समरसता की ओर प्रेरित करती है। इसलिए यह उपन्यास समकालीन हिंदी साहित्य ही नहीं, बल्कि वैश्विक साहित्यिक विमर्श में भी अत्यंत प्रासंगिक और विचारोत्तेजक कृति के रूप में स्थापित होता है।

REFERENCES

1. श्री, गीतांजलि. (2018).*रेत समाधि*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

2. श्री, गीतांजलि. (1993).*माई*.नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

3. श्री, गीतांजलि. (2000).*हमारा शहर उस बरस*.नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

4. सिंह, नामवर. (2002).*कहानी : नई कहानी*.नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

5. सिंह.बच्चन (2005). *आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास* .इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।

6. पचौरी, सुधीश. (2010). *समकालीन हिंदी साहित्य और विमर्श* . नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

7. यादव, राजेंद्र. (संपा.).*हंस पत्रिका*.नई दिल्ली: राजेंद्र यादव संपादित अंक।

8. सिंह, मैनेजर पांडेय. (2004).*साहित्य और इतिहास दृष्टि*.नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

9. पांडेय, मैनेजर. (2004). *साहित्य और इतिहास-दृष्टि*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

10. पचौरी, सुधीश. (2010). *समकालीन हिंदी साहित्य और विमर्श*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

11. सिंह, बच्चन . (2005). *आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास*. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।

12. चौहान, महावीर सिंह. (2005). *स्त्री-विमर्श : भारतीय परिप्रेक्ष्य*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

13. सिंह, राजकिशोर (सं.). (2008). *स्त्री के लिए जगह*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

14. जैन, निर्मला. (2008). *साहित्य का समाजशास्त्र*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।